# अनोखे उद्यान के एक अनोखे माली

-ब्र.कु. निर्वैर, महासचिव, ब्रह्माकुमारीस

आपने अपने जीवन में अनेकों उद्यान एक दो से बढ-चढकर देखें होंगे। और उनमें विभिन्न प्रकार के फूल, फल भी देखें होंगे। लेकिन क्या आपने कोई चैतन्य फूलों का बगीचा देखा है ? ऐसा बगीचा जिसमें मनुष्यात्मायें फूलों के समान हों और जिन फूलों के बगीचे को एक विचित्र माली विचित्र प्रकार से दैवी गुण सम्पन्न एवं खूशबूदार बना रहे हो, बगीचे और उन फूलों को देख-देखकर वह मुस्कुराता हो, हर्षित होता हो। पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा एक ऐसे ही माली थे जो 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय' नामक एक ऐसा ही अलौकिक, चैतन्य एवं विविध प्रकार के फूलों का बगीचा बनाने के निमित्त बने और अपने पार्थिव शरीर के त्याग के अन्तिम क्षण तक इस अनुपम बगीचे को ईश्वरीय ज्ञानामृत से सींचते रहे।फलस्वरूप आज भले ही वे (माली) अपने साकार रूप में उपस्थित नहीं हैं परन्तु उनके द्वारा सुसज्जित यह 'चैतन्य फूलों का बगीचा' दिन-प्रतिदिन और ही बढता जा रहा है।

इस चैतन्य बगीचे के फूल हम आत्मायें अपने अनुभव से यह जानते हैं कि

पुरूषोत्तम संगमयुग में 'बागवान' और 'माली'दोनों एक ही वाहन पर सवार हो अपने बगीचे में आते थे। निराकार ज्योति बिन्दु स्वरूप परमपिता परमात्मा शिव इस बगीचे के बागवान हैं और पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा इसके माली, परन्तु बाप (शिव) और दादा (ब्रह्मा) दोनों का वाहन एक ही ब्रह्मा-तन था जिस पर विराजमान हो वे अपने प्यारे बच्चों से मुलाकात करते, उन्हें परमात्मिक प्यार देते और उनमें आत्मिक बल भरते ताकि ये चैतन्य फूल सदैव हरे भरे बगीचे में दिव्य गुणों की धारणा से ऐसे सुगन्धित बनें जो ये जहाँ कहीं भी जायें, इन्हें देखकर अन्य लोग यही समझें, कि ये तो कोई 'फरिश्ते' हैं अथवा 'अल्लाह के बगीचे' के फूल हैं।

बापदादा का यह बगीचा बडा ही सुन्दर और विभिन्न धर्मों, देशों व भाषा वाले चैतन्य फूलों का बना हुआ है। यों तो यह सारी सृष्टि ही परमपिता परमात्मा का बगीचा था परन्तु कलियुग के अन्त में इस समय सभी विकारों के वशीभूत होने के कारण बिल्कुल काँटे बन चुके हुए हैं। अब यह संसार एक जंगल के समान बना हुआ है जिस में लडाई-झगडे एवं अशान्ति की जंगली आग दिनोंदिन फैलती ही जा रही है। इन्हीं कॉटों एवं पतितों को बापदादा अब ईश्वरीय ज्ञान व योगबल से सींच कर बडे ही सुन्दर, सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी,मर्यादा पुरूषोत्तम, अहिंसा परमोधर्म: देवी-देवता चैतन्य फूल बना रहे हैं।

आबू स्थित पाण्डव भवन में बापदादा ने एक छोटा सा बगीचा जड फूलों का भी तैयार किया था जो आज भी उनकी स्मृति दिलाता है। बापदादा जब भी इस बगीचें में जाते थे, वे फूलों को बडे प्यार से देखते थे और बडे गहरे विचारों में चले जाते थे। पुनश्च, चैतन्य फूलों के बगीचे मे अथवा क्लास में आकर सभी को बडे स्नेह से देखते और हरेक को जड फूलों से तुलना करके देखते और फिर बाबा पूछते – ''आप कौन से फूल हैं ? किंग ऑफ फ्लावर हो, सदा गुलाब हो, मोतिया हो, कली हो या अक के फूल हो ? जैसे मुरझाई कलियाँ और फूल अपने माली व बागवान को देख नाच उठते हैं, मुस्कुराने लगते हैं वैसे ही बाबा जब अपने चैतन्य फूलों को मुस्कुराते हुए, रूहानी प्रेम से भरे हुए उन नैनों से जिनकी गहराई समुद्र से भी गहरी थी देखते थे तो हम आत्मायें भी बापदादा की पवित्र दृष्टि पडते ही खुशी में खिल उठते थे, फूले न समाते थे। यों कहें कि एक सेकेण्ड में बापदादा से नैन-मुलाकात करते ही खुशी में रोमांच खडे हो जाते। आत्मा दिल ही दिल में नाचने लगती और अतीन्द्रिय सुख का अपार खजाना प्राप्त कर इस दुनिया के अल्पकालीन सुखों को बिल्कुल ही भूल जाती और भला ऐसा होता भी क्यों न ? विश्व की सर्वोच्च हस्तियाँ, एक परमपिता परमात्मा शिव और दूसरे प्रजापिता ब्रह्मा के एक ही रूप मे दोनों परम हस्तियों से अपने पिता के अति स्नेही और अति निकट सम्बन्ध से मिलना कोई कम सौभाग्य की बात है क्या ? वस्तुत: यही तो वास्तविक सौभाग्य है। जिस इच्छा की पूर्ति जन्म-जन्मान्तर भक्ति मार्ग में भी न हो सकी, वह अब सहज ही पूर्ण हुई। अपने पारलौकिक एवं अलौकिक पिता दोनों से पुन: कल्प 5000 वर्ष के बाद

शेष पेज 6 पर...

# अनासक्त वृत्ति अपनाओ

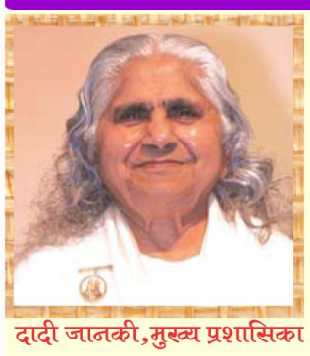

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

जाना सुख इलाही कहते हैं तो एक इलाही माना अनागिनत, दूसरा अल्लाह के तरफ से मिलने वाला सुख। अल्लाह जितना सुख देता है उतना कोई दे नहीं सकता है। हम उसका वर्णन नहीं कर सकते हैं। बाबा का बनने से कितना सुख मिला है, कभी बैठकर गिनती करें तो दु:ख की बातें सहज ही भूल जाती हैं। बाबा कहते हैं - जब माया की हलचल मचाने वाली बात आये तो अंगद को याद करो। अंगद से अचल रहना सीखते हैं। माया का काम ही है हलचल में लाना। किसी ने किसी के जरिए माया हलचल में ले आयेगी। दोष उसको नहीं दे सकते। माया किसी को भी निमित्त बनाकर हमें परखती है। उसके लिए बाबा हमेशा कहते - बच्चे, हनुमान की तरह महावीर बनो। महावीर हैं तो माया कितना भी पांव हिलाने की कोशिश करे लेकिन हिला नहीं सकती। हमारी स्थिति हिल नहीं सकती। तो सदा ही संगमयुगी पुरुषार्थी जीवन में हमें महावीर बनकर रहना है। जैसे वो डॉक्टरी की पढ़ाई पढ़ते हैं, तो जब तक पास न हो जायें, छोड़ते नहीं। हम भी नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनने के लिए पढ़ रहे हैं। जब तक वह लक्षण नहीं आयेंगे तब तक पढ़ाई नहीं छोड़ेंगे। सदा लक्ष्य की स्मृति लक्ष्यदाता की स्मृति को मजबूत बनाती है। इसलिए बाबा ने कहा कि इस पुरानी दुनिया में हमारी कोई आसक्ति न हो। जब पहले-पहले हम लोग ज्ञान में आये थे तो 'आसक्ति' और 'अनासक्ति' ये दो शब्द बहुत अच्छे लगते थे। हम चेक करते थे हमारी वृत्ति कहां तक अनासक्त है? जिसको बाबा दूसरे शब्दों में कहते हैं - इच्छा मात्रम् अविद्या। इच्छा की कोई विद्या ही नहीं है। इच्छा की इतनी अविद्या हो जाये, नहीं तो इंसान कहेंगे - इच्छा के बिना कैसे चल सकते हैं? लेकिन सांसारिक पदार्थों की, व्यक्तियों के द्वारा प्राप्तियों की अविद्या हो जाये। जब दुनिया पराई है तो उनके द्वारा प्राप्ति की इच्छा रखना माना कम समझ है। जिस कारण ज्ञान को धारण नहीं कर सकते हैं। पुरानी दुनिया में आसक्ति है तो इन आँखों के द्वारा कुछ देख लेंगे, कानों द्वारा कुछ सुन लेंगे, मुख के द्वारा कोई ऐसी बात बोल देंगे या खा लेंगे। खाने-पीने की इच्छा होती है तो परहेज वा मर्यादा तोड़ देते हैं। बोलने में भी कभी न कभी नाराजगी से उल्टा-सुल्टा किसी को बोल देंगे। जैसे खाने की परहेज है, वैसे बोलने की परहेज है। संभलकर बोलो। ऐसे ही दृष्टि का आधार वृत्ति पर है। हमारी वृत्ति साफ है तो दृष्टि से पता चलता है। जो शब्दों द्वारा हम किसी को नहीं कह सकते, कोई हमारे भाव को नहीं समझता लेकिन वृत्ति साफ है तो जो हमारा भाव है। सेवा में किसी का भला करने की भावना है, वो काम करेगी। शुभ भावना से सेवा की हॉबी को बढ़ाओ। बोल के बजाए अपनी भावना को श्रेष्ठ बनाओ, अच्छा की हॉबी को बढ़ाओ। बोल के बजाए अपनी भावना को श्रेष्ठ बनाओ, अच्छा बनाओ। इससे हमारी वृत्ति-दृष्टि साफ होती जायेगी। अपने आपको अच्छा लगेगा।

ईश्वरीय परिवार से भी निभाने का तरीका चाहिए। जल्दी अपसेट न हो। प्रवृत्ति वालों को भी अपने परिवार को संभालना पड़ता है। निभाना कोई लाचारी नहीं है। सच्चाई से निभाना है, अच्छी भावना से निभाना है। ताकि दूसरों की दिल भी अपने आप भावना से बदल जाये। बाबा कहते हैं - किसी का कितना भी कड़ा कर्मबंधन हो, अपने आप टूट जायेगा। कर्मबंधनों को जबरदस्ती नहीं तोड़ सकते। प्रेम की शक्ति कर्मबंधनों को पिघलाती जायेगी। बाबा के याद की, सेवा की और निश्चय की कमाल है। ऐसी भी घड़ी आयेगी जो कोई भी कर्मबंधन नहीं रहेगा। बाबा से सम्बन्ध इतना अच्छा बनाते जायें, फिर अंदर से आवाज ही नहीं निकलेगी कि मेरा कोई कर्मबंधन है। कर्मबंधन दु:खी नहीं कर सकता है। हम निभाने मात्र बैठे हैं। अंदर से बाबा के सम्बन्ध की शक्ति है, जो चला रही है, निभाने में मदद कर रही है। जिसके साथ निभा रहे हैं वो भी हमारे से संतुष्ट हैं।

# परमात्म के साथ का बायदा निभाना

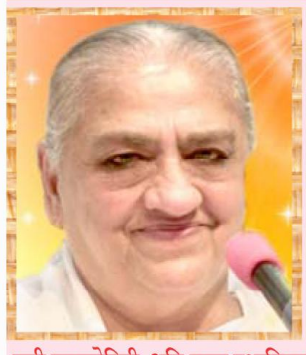

दादी हृदयमोहिनी,अति.मुख्य प्रशासिका

हमारा संकल्प में यही है कि हमें हाथ में हाथ दे करके साथ चलना ही है। बाबा जैसा बनना ही है। तो अपने आपको देखो कि मैंने बाबा से जो वायदा किया है कि बाबा आपके साथ ही चलना है। तो बाबा जैसा समान बनना है। तो यह चेक करना है कि बाबा जैसा कहां तक बना हूँ? बनना है। तो यह चेक करना है कि बाबा जैसा कहां तक बना हूँ? बनना तो जैसा है, वैसा ही है। लेकिन अभी कहां तक बने हैं? बाबा क्या है और हम क्या है? बाबा से मिलन मनाते हैं तो बाबा के सूरत से, मूरत से बाबा के गुण, बाबा की शक्तियां सब दिखाई देती हैं। उनको देख करके हमको अपने आपको चेक करना है, बाबा हमारे सामने आने से ही दर्पण बन जाता है।

बाबा सभी को अपने समान बनाने चाहता है। ऐसे नहीं पीछे-पीछे आओ, नहीं, बाबा कहता है मेरे समान बनो। तो समान बनने के लिए हमने देखा है, बहुत सहज युक्ति है, कई भाई-बहन जो हैं वो करके पीछे चेक करते हैं, तो बाबा जैसा किया है या नहीं किया है? करने के पहले ही चेक करें कि यह बाबा ने किया? मानो मंसा संकल्प है तो यह हमको करने के पहले चेक करना चाहिए कि जो बाबा कहता है मंसा सेवा करो तो हम उसी प्रमाण मंसा सेवा करते हैं? बाबा की मंसा में हम एक-एक बच्चे के लिए क्या है? जो कम पुरुषार्थी हैं उनके लिए भी बाबा को इतना ही प्यार है जितना औरों से है। तो कम पुरुषार्थियों के लिए बाबा का प्यार भी है, रहम भी है। नम्बरवार तो सभी हैं ना, इसका ही यादगार माला है। पुरुषार्थी तो सभी हैं लेकिन नम्बरवार हो ही जाते हैं, तो कुछ भी कमी है उसके ऊपर रहम आता है या दूसरा कुछ आता है, जो होना नहीं चाहिए?

बाबा ने हमारी अभी दो कमजोरियां सुनाई हैं, एक बाबा ने कहा जो मैंने कहा है सेकण्ड में बिन्दी लगाओ, बिन्दी बन जाओ और बिन्दी को देखो क्योंकि आगे चल करके ऐसा समय आने वाला है जो सेकण्ड में फुलस्टाप लगाने का अगर अभ्यास नहीं होगा तो हम उस पेपर में पास नहीं हो सकेंगे क्योंकि वह पेपर अचानक आना है। पेपर की डेट आउट नहीं होनी है, अचानक होना है। दूसरा उस समय हालतें ऐसी होंगी जो आप पुरुषार्थ करो कि सेकण्ड में पुरुषार्थ करके बिन्दी लगा दूं, तो वह समय ही नही होगा। आजकल भाव-स्वभाव, पुराने संस्कार ही विघ्न डालते हैं और बाबा ने कहा कि संस्कार मिलन के रास की डेट फिक्स करो। तो उस डेट के लिए तैयार हो? अब बाबा का कहना और हमारा करना साथ-साथ होना चाहिए। मम्मा इसी विशेषता से नम्बरवन बनी। मम्मा कहती थी, बाबा ने कहा मम्मा ने किया, हमारे पुरुषार्थ में भी ऐसे ही अगर दो शब्द ''कहा और किया'', यह हो जाये। तो नम्बर आगे हो जायेगा। इसके लिए रोज की मुरली अटेंशन से पढ़ो, रोज की मुरली में चार ही सबजेक्ट बाबा बोल देता है - ज्ञान, योग, धारणा और सेवा। तो मुरली हमारे प्रति है। और हम भी ध्यान से मुरली पढ़ते वा सुनते हैं तो बाबा ने जो कहा है वो हमको करना है, बस। और कोई ज्यादा पुरुषार्थ है क्या? सहज चीज तो करना कोई मुश्किल नहीं होती है। मुश्किल तब होती है जब कोई न कोई संस्कार या कोई न कोई व्यर्थ संकल्प मन में आ जाता है या कुछ व्यर्थ देख लेते हैं तो वो दिल में छप जाता है। सभी ने अभी यहां बैठे-बैठे अपने को चेक किया होगा कि कितना समय अशरीरी स्थिति में रहे? अभी तो कोई काम नहीं है, अगर कोई से भाव-स्वभाव है तो अभी वो भी सामने नहीं है, खाली है, तो अभी अभ्यास किया, हो सकता है? अच्छा, सारे दिन में कितना बारी यह अभ्यास करते हो? इस अभ्यास को करने के लिए बैठने की बात नहीं है, चलते-फिरते भी तो बिन्दी लग सकती है। दूसरे को भी बिन्दी रूप में देख सकते हैं ना! इसमें टाइम कितना लगता है? कुछ नहीं। सोच-विचार में लाओ कि मैं बिन्दी हूँ, यह भी बिन्दी है वो भी बिन्दी है तो इसमें क्या टाइम लगता है।